शोध परिधि ISSN-2349-9575

साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

नागार्जुन और प्रगतिशील काव्य : एक चिन्तन

डॉ. जीत सिंह
स. प्रो. हिन्दी
कु0मा0रा0म0स्ना0 महाविद्यालय
बादलपुर (गौ.बुद्धनगर)

शोध सारांश

नागार्जुन घुमक्कड़ प्रवृत्ति के व्यक्ति थे जो कि ये आदत बचपन में अपने पिता से मिली थी। बाद में वे 'घुमक्कड़ शास्त्र' के लेखकसांकृत्यायन के लम्बे साहचर्य रहे। राहुल जी पर नागार्जुन के तीन अविस्मरीय लेख हैं- राहुल उनका साहित्य और व्यक्तित्व, राहुल सांकृत्यायन और विलक्षण राहुल। नागार्जुन और राहुल जी का साथ तिब्बत यात्रा से लेकर जेल यात्रा तक रहा। कहा जाता है कि जेल में राहुल जी बोलकर नागार्जुन से उपन्यास लिखवाते थे। कथा रचना की प्रबल इच्छा नागार्जुन में वहीं से उत्पन्न हुई। नागार्जुन अपने पत्रों में लिखते हैं कि अगले कुछ दिनों में मेरा पता होगा - इलाहाबाद, पटना, दिल्ली, विदिशा हापुड़, जहरीखाल, वाराणसी या कलकत्ता आदि। इसके अतिरिक्त उनके पत्र उज्जैन, खतौली, बढौदा, लखनऊ, संभलपुर, देवघर, श्रीनगर, पीलीभीत आदि स्थानों से लिखे गये हैं। झोले में अपनी रचनाएँ, हिन्दी और बांग्ला की पत्रिकाएँ, काफी दिन तक अपना 'यात्री प्रकाशन' लेकर घूमने वाले नागार्जुन का अनुभव और सम्बन्ध संसार जितना विशाल था, उनकी लिखी अधलिखी रचनाओं का विस्तार भी उतना ही विशाल था।

हिन्दी के यायावरों की भीड़ में 'यात्री' नागार्जुन के नाम की यात्रा का भी रोचक इतिहास है। 1929 में मैथिली की पहली कविता 'वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यार्थी' तरौनी निवासी' के नाम से प्रकाशित हुई थी। दो साल बाद 1934 में वह 'यात्री' बना। 'विशाल भारत' में कुछ कविताएँ 'अकिंचन' नाम से छपीं। श्रीलंका जाकर वह 'नागार्जुन' बना। तब से नागार्जुन और यात्री नाम साथ रहे। आगे चलकर दोनों भूमिकाएँ बँट गई। मैथिली में 'यात्री और हिन्दी में नागार्जुन।"

विष्णु नागर ने हिन्दी काव्य संवेदना और सौन्दर्य दृष्टि को समृद्ध करने में नागार्जुन का योगदान बताते हुए लिखा है कि 'जीवन के अनेक अनुभव और ऐसे अनुभव उन्होंने कविता में दाखिल कराये, जिनका पहले प्रवेश निषिद्ध था। कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि मादा